<u>प्रेस विज्ञप्ति</u>

गोरखपुर, 14 सितम्बर। युगपुरुष ब्रह्मलीन महन्त दिग्विजयनाथ जी महाराज की 50वीं तथा राष्ट्रसंत महन्त अवेद्यनाथ जी महाराज की पाचवीं पुण्यतिथि के अवसर पर गोरक्षनाथ मन्दिर में आयोजित साप्ताहिक श्रद्धांजलि समारोह के चैथे दिन 'श्रीमद्भागवत महापुराण कथा ज्ञानयज्ञ' के प्रारम्भ में व्यासपीठ का विधि-विधान से पूजन-अर्चन हुआ। व्यासपीठ से अनन्त श्रीविभूषित जगद्गुरू रामानुजाचार्य स्वामी राघवाचार्य जी महाराज ने कहा कि जब मृत्यु का अधिकार शरीर पर हो जाता है तब आत्मा शरीर छोड़ देती है। मृत्यु के समय व्यक्ति जिसका स्मरण करके प्राण त्यागता है। पुनः उसी के रूप में पैदा होता है। मनुष्य का शरीर साधन है। यह साध्य कभी नहीं हो सकता इसलिए शरीर को साध्य कर तप करना चाहिए। जब तक प्रभु की कृपा नहीं होगी जीवन बन्धन से मुक्ति नहीं मिलेगी। मम् बन्धन का कारण है। मम् के भाव से ममता पैदा होती है, मोह होता है और मोह ही सबसे बड़ा बन्धन है। मोह ही सभी दुखो का कारण है। इसलिए हर क्षण मनुष्य को ईश्वर में लगाना चाहिए। एक जन्म में की गयी भक्ति जन्म जन्मान्तर के पापों को धो डालती है। प्रभु का उल्टा नाम जप कर भी महर्षि बाल्मिकी अमर हो गये। मात्र जीवन जीना लक्ष्य नहीं है। पशु भी तो जीवन जी लेता है। जीवन का लक्ष्य भगवान के भक्ति में तल्लीन रहना है। भगवान तो अपने भक्तों को सच्चा साबित करने में लगे रहते हैं। प्रहलाद की बाणी को सत्य करने के लिए भगवान खम्भे में प्रगट हुये।

कथा को आगे बढ़ाते हुए सबसे पहले भागवत का महात्म्य बताते हुए कथा व्यास ने कहा कि भागवत मानव के शोक और मोह को दूर करने की कथा है। मोह द्वारा भय उत्पन्न होता है। वस्तु को वास्तविक स्थिति में न देखना ही मोह है। इसके कारण अनित्य संसार नित्य प्रतीक होता है। शुकदेव जी महाराज ने परीक्षित जी के जिज्ञासा को शान्त करते हुए कहा कि भगवान के चरित्र श्रवण से मोह, शोक और भय दूर होते है। भगवत् चरित्र, भगवत् कथा का अनुश्रवण करने से ब्रह्म का साक्षात् दर्शन होता है। भागवत कथा से भगवत् दर्शन होता है। ऋषियों ने भगवत कथा के माध्यम से ही भगवत् दर्शन का आनन्द प्राप्त किया। कबीर, सूर, मीरा ने ईश्वर की स्तुति कर भगवान का प्राप्त किया और भगवान को अनन्य भाव से देखा। रामानुजाचार्य और बल्लभाचार्य ने भी भगवान की भक्ति का रसास्वादन किया। भागवत कथा श्रवण से मन, प्रभु में स्थिर हो जाता है। मन को निर्मलता प्राप्त होती है। जैसे शरद ऋतु में नदियों का जल निर्मल हो जाता है उसी प्रकार से कथा से मन में सद्गुण आते है और मन निर्मल हो जाता है। नित्य भगवत गुण के दर्शन ही भगवत दर्शन है। विषय वस्तु का चिन्तन न होकर प्रभु का चिन्तन होना भगवान का दर्शन है।

प्रहलाद की कथा को आगे बढ़ाते हुए कथाव्यास ने कहा कि भगवान ने प्रहलाद से क्षमा मांगी और कहा कि आपको अनेक यातनाएं मिलीं पर आपने भक्ति नही छोड़ी। मैं विलम्ब से आया इसके लिए मैं क्षमा चाहता हूँ। जिस रूप को देखकर स्वर्ग के देवता भी डर गये थे वहीं प्रभु प्रहलाद को गोंद में लेकर अपना वात्सल्य प्रदान करते हैं। यहाँ भगवान का प्रभाव और स्वभाव दोनों दृष्टिगत होता है। भगवान के सभी अवतार पूर्ण हैं। "अवतरित इति अवतारः।" भगवान ने अपनी कोमलता का परिचय दिया और अपनी सौशिल्यता का भी। महान से महान से लेकर तुच्छ जीव से बिना संकोच मिलना सौशिल्यता

है। जटायु के मरने पर भगवान इतने दुःखी होते है जितना कोई बन्धु के मरने पर नहीं होगा। उनका वैदिक रीति से अन्तिम संस्कार करते है। अगर आत्मा पवित्र है तो पक्षी भी उत्तम है। ग्वालवालों के कंधो पर हाथ रखकर चलते है। गोपियों से मटकी ले लेते हैं। भगवान जाति, धर्म, कुल, आयु नही देखते। "निर्मल मन जन सो मोहि पावा।" जिसका मन निर्मल होता है उसको भगवान सहज रूप में प्राप्त हो जाते है। लोग विदुर को चिढ़ाते हैं पर भगवान विदुरानी के हाथों से केले के छिलके को खाते हैं। सुदाम को देखकर उनकी आँखों से अश्रु की धारा बहने लगती है।

आगे कथाव्यास ने गजेन्द्र मोक्ष की कथा सुनाई। ग्राह के जल में गज को पकड़ने पर गज ने जिस प्रकार से प्रभु को पुकारा वैसी ही पुकार हमारी भी होनी चाहिए तो प्रभु आयेंगे। गज को जल में अकेला छोड़कर विपत्ति के समय एक-एक करके सभी चले गये। विपत्ति में भगवान ही साथ देते हैं। "धीरज, धरम, मित्र अरु नारी।" ये चार विपत्ति के समय पर परखे जाते है। सम्पूर्ण जगत् पर परमात्मा का ही शासन और अनुशासन हैं। ऐसा सोचकर गज ने भगवान को पुकारा और भगवान दौड़े चले आए। जीव जब अनन्य भाव से भगवान को भजता है तो भगवान उसे मिलते हैं। गोस्वामी तुलसीदास जी जानते थे कि राम और कृष्ण एक ही हैं, पर अनन्यतावश ही उन्होंने राम की पूजा की और भगवान धनुषवाण लेकर उपस्थित हो गये थे। गज की रक्षा भगवान ने की परन्तु सामने नहीं आये। क्योंकि "बिनु पग चले सुने बिनु काना। कर बिनु कर्म करे विधिनाना।" गज ने शुष्क पुष्प लेकर भगवान को ढूंढा। भगवान की सुन्दर छवि दिखाई दी। गज ने चरणों में वन्दन किया। भगवान की स्तुति की और कहा कि मुझ जैसे पशु जीव के लिए भी आप बैकुण्ठ से दौड़े चले आए। शुकदेव जी परीक्षित जी से कहते हैं कि जो भी अनन्य भाव से भगवान की प्रार्थना करता है, भगवान अपने आश्रित की रक्षा करने चले आते हैं। इस कथा आध्यात्मिक पक्ष प्रस्तुत करते हुए कथाव्यास ने कहा कि यह संसार सागर है, तृष्णा जल है, क्योंकि तृष्णा अनन्त है। तरंगे काम, लोभ, क्रोध हैं। पुत्र, नाविक है। पत्नी भँवर हैं पर अनुकूल पत्नी भव से पार भी करा देती है। पुत्र अनुकूल हुआ तो भवसागर पार करा देगा और यदि प्रतिकूल बना तो डूबो देगा। 'भक्त जब पुकारे भगवन दौड़े चले आते हैं।' इस भजन से पूरा सभागार भक्तिमय हो गया।

कथाव्यास ने आज के कथा में मनु के पुत्र प्रियब्रत की कथा, भगवान ऋषभ देव की जन्म की कथा में कहा ऋषभ देव के जेष्ठय पुत्र भरत के नाम पर हमारे देश का नाम भारतवर्ष पड़ा इससे पहले इसे अजनाभ वर्ष कहा जाता था। जड़भरत की कथा, अजामिल की कथा का बहुत ही मनोहारी चित्रण किया।

कथा को आगे बढ़ाते हुए कथाव्यास ने समुद्रमंथन की कथा सुनाई। देव और दैत्यों ने मिलकर मंदराचल पर्वत की मथनी बनाकर और वासुकि नाग की रस्सी बनाकर समुद्र मंथन किया। जब मंदराचल डूबने लगा तो भगवान कच्छप बनकर उसके नीचे बैठ गये। सबसे पहले विष प्रकट हुआ। जब व्यक्ति लक्ष्य की तरफ बढ़ता है तो सबसे पहले कठिनाइयां सामने आती हैं। विष को शिव जी ने कंठ में धारण किया और उनका कंठ नीला हो गया। इसलिए उन्हें लोग नीलकंठ महादेव कहते हैं। इसका आशय यह है कि माता, पिता, बड़े अगर कुछ रुष्ट होकर भी कुछ कहें तो उसको सहन करें। लक्ष्मी जी निकली और भगवान ने उन्हें धारण किया। भगवान को दरिद्रा मिली और उसने कहा कि मुझे भी संसार में रहने का स्थान दीजिए तो भगवान ने कहा कि जिसके कपड़े गन्दे हों, दांतों में गन्दगी हो, बहुत भोजन करने वाला हो, सूर्योदय और सूर्यास्त के समय सोने वाला हो, जूठे बर्तन रातभर जहाँ रहें, तुम वही निवास

करना। समुद्र मंथन से अमृत निकला तो दैत्य झपट पड़े। भगवान ने मोहिनी का रूप बनाकर अमृत देवताओं को पिलाया और विष दैत्यों को। दैत्यों को अमृत देना उचित नहीं था। कारण ''पयः पानम् भुजंगानाम् केवलम् विषवर्धनम्।''

राजा बलि की कथा सुनाई गई। राजा बलि ने यज्ञ करने, गायों और अतिथियों की सेवा करने और ब्राह्मणों की सेवा करने के कारण शक्ति अर्जित किया। नर्मदा के तट पर सैकड़ों यज्ञ किये। प्रहलाद ने स्वर्ग से आकर विजय माला पहनाई। शक्ति अर्जित होने पर दैत्य सर्वत्र टूट पड़े। सर्वत्र बलि का एकाधिकार हो गया। अदिति के गर्भ से सर्वेश्वर भगवान का जन्म हुआ जिसे वामन अवतार कहते हैं। वामन ने बलि से तीन पग भूमि की याचना की। दो पग में सब कुछ नाप लिया तीसरे पग को उन्होंने बलि के मस्तक पर रख दिया। यह बलि पर भगवान की असीम कृपा थी। प्रहलाद के सिर पर कमलवत करों से स्पर्श किया था और बलि के मस्तक पर ही अपने चरण कमल रख दिये।

भगवान श्रीकृष्ण के जन्म की कथा के अवसर पर नन्द के आनन्द भयो, जय कन्हैया लाल की। जय हो नन्दलाल की, जय यशोदा लाल की।। भजन से पूरा परिसर भक्तिमय हो गया।

कथा के अन्त में यजमानगण द्वारा आरती की गई एवं प्रसाद वितरण हुआ। कथाव्यास अनन्त श्रीविभूषित जगद्गुरू रामानुजाचार्य स्वामी राघवाचार्य जी के साथ श्रीमद्भागवत कथा का संगीतमय अमृतपान कराने के लिए हारमोनियम पर श्री अवधेश जी, तबले पर श्री सौरव जी, वायलिन पर श्री सुशील जी और वैकिम पर श्री भानु प्रताप जी ने सहयोग प्रदान किया।

मुख्य यजमानगण गोरखनाथ मन्दिर के प्रधान पुजारी योगी कमलनाथ जी, श्रीमहन्त रविन्द्रदास जी, योगी धर्मेन्द्रनाथ, तनुज जालान, विकास जालान, रेवती रमण दास अग्रवाल, अरूण कुमार अग्रवाल, जवाहरलाल कसौधन, श्रीचन्द बंसल, महेश पोद्दार, सीताराम जायसवाल, अवधेश सिंह, अजय सिंह आदि ने सपरिवार व्यासपीठ का पूजन किया।

<u>कथा के अमृत मंत्र</u>

1. सभी धर्मों से बड़ा राष्ट्र धर्म है।
2. श्रीमद्भागवत् कथा का श्रवण मन को निर्मल बना देता है।
3. भगवान जाति नहीं, मन एवं भाव देखते हैं।
4. सदाचरण जीवन का सबसे बड़ा आभूषण है।
5. आपत्तिकाल में धर्म और धैर्य ही सहारा बनते हैं।
6. छुआ-छूत पाप है। अस्पृश्यता शास्त्र सम्मत नहीं।
7. दुष्ट के हाथ में सत्ता नही देनी चाहिए।
8. भक्तों की सच्ची पुकार को भगवान अवश्य सुनते हैं।
9. जिसके ऊपर गऊ और गुरु की कृपा हो, उसपर विजय पाना संभव नही।
10. अनन्य भाव से भक्ति करने वाले भगवान को प्राप्त करते हैं।
11. संसार अनित्य है और ईश्वर नित्य है।

दिनांक 15.09.2019 साप्ताहिक श्रद्धांजलि समारोह में संगोष्ठी

साप्ताहिक श्रद्धाजलि समारोह के अन्तर्गत पूर्वाह्न 10.30 बजे से ‘ भारत की सनातन संस्कृति में गो सेवा का महत्व ’ विषय पर संगोष्ठी दिग्विजयनाथ स्मृति सभागार में सम्पन्न होगी। संगोष्ठी की अध्यक्षता पूर्व कुलपति एवं महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद के अध्यक्ष प्रो0 यू0पी0सिंह जी करेंगे, मुख्य अतिथि अरैल आश्रम प्रयागराज से पधारे स्वामी गोपाल जी महाराज तथा मुख्य वक्ता प्रो0 श्याम नन्दन जी अध्यक्ष गो सेवा आयोग उ0प्र0 होंगे। संगोष्ठी में श्री अतुल सिंह पूर्व विधायक एवं उपाध्यक्ष गो सेवा आयोग उ0प्र0 का भी व्याख्यान होगा।